RESEARCH PAPER

RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
e-ISSN: 2349-7637 | Vol.09 | Iss.01 | January 2022 | pp. 36-39
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

The epic story of an extraordinary woman hidden in an ordinary woman 'Ret Samadhi'
साधारण औरत में छिपी असाधारण स्त्री की महागाथा 'रेत समाधि'

*Jitendra Kumar Meena

Research Scholar, Department of Hindi, University of Rajasthan, Jaipur

Abstract

Gitanjali Shree, a sensitive storyteller who has a deep grip on all the concerns of women's life, has written and given public expression by keeping the stories-interactions of women's nature, psychology and struggle in the center from household to family to community and region. In the fiction of Gitanjali Shree, those traditional issues of Indian society have been raised which seem alive in every situation. Especially communal frenzy, discrimination of caste, oppression and exploitation of women, all the more experienced realities related to middle class life, environmental movements and changes as well as a series of stories full of contemporary sense.

Keywords: *Sensation, border, great story, samadhi, Kaifiyat, failure.*

Abstract in Hindi

नारी जीवन के सभी सरोकारों के प्रति गहन पकड़ रखने वाली संवेदनशील कथाकार गीतांजलि श्री ने घर–परिवार से लेकर समुदाय और क्षेत्र विशेष तक में नारी के स्वभाव, मनोविज्ञान और संघर्ष की कथाओं–अन्तर्कथाओं को केन्द्र में रखकर उन्होंने जो लिखा और सार्वजनिक अभिव्यक्ति दी। गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में भारतीय समाज के उन परंपरागत मुद्दों को उठाया गया है जो हर हाल में जीवन्त लगते हैं। खासकर साम्प्रदायिक उन्माद, जात–पात का भेद, नारी प्रताड़ना एवं शोषण, मध्यवर्गीय जीवन जीने वालों से जुड़े तमाम और भोगे हुए यथार्थ, परिवेशीय हलचलों एवं परिवर्तनों के साथ ही समसामयिक बोध से भरे कथ्यों का श्रृंखलाबद्ध समावेश है।

Keywords: *संवेदना, सरहद, महागाथा, समाधि, कैफियत, मुफलिसी।*

Article Publication

Published Online: 12-Jan-2022

***Author's Correspondence**

Jitendra Kumar Meena

Research Scholar, Department of Hindi, University of Rajasthan, Jaipur

jkmramjas[at]gmail.com

10.53573/rhimrj.2022.v09i01.007

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

उपन्यास में एक बूढ़ी औरत है उसका जिक्र आने के काफी देर बाद पता चलता है उसका पूरा नाम चंद्रप्रभा देवी है। उपन्यास में ज्यादातर लोग उसे अम्मा ही कहते हैं। होता ये है कि अम्मा ने अपने पति के निधन के बाद बरसों से पलंग पकड़ रखा है। पूरा घर लगा रहता है कि अम्मा पलंग से उठे, थोड़ा घूमे फिरे. लेकिन अम्मा ने तो जैसे प्रतिज्ञा ले रखी है कि वो नहीं उठेगी। बेटा, बहू, बेटी, पोते– सब कहते रहते हैं कि अम्मा उठ. मगर ना जी ना। वो नहीं उठती है. गठरी की तरह पड़ी रहती हैं। फिर अचानक एक दिन वो होता है जिसकी कल्पना घर के किसी सदस्य ने नहीं की थी। अम्मा उठती है और बिना किसी को बताए एक छड़ी के सहारे घर से बाहर निकल जाती है। पूरा परिवार सकते में. खोज खबर होती है। फिर अम्मा मिलती है एक थाने में. अम्मा घर लौटती है और उसके बाद बेटी के पास रहने चली जाती है। बेटी जो शादीशुदा नहीं है किंतु किसी के साथ सहजीवन बिताती है। उसके बाद तो अम्मा में कायाकल्प होने लगता है और ये होता है रोज़ी नाम की उभयलिंगी यानी ट्रांसजेंडर, जिसे आम बोलचाल में हिजड़ा कहा जाता है, के कारण. रोज़ी कभी कभी वेश बदलकर रज़ा मास्टर हो जाती है। दो अदाओं में एक ही शख्स (अर्थात् तीसरे लिंग या थर्ड जेंडर की चर्चा है यहाँ)

रोज़ी के सानिध्य में अम्मा अपने पहनावे ओढ़ावे से लेकर हर दैनिक दिनचर्या में बिल्कुल बदल जाती है। ऊर्जा से लबालब हो जाती है, उसमें नई हसरतें जागने लगती हैं, कौन् से बदन वाली रोज़ी के संग मां भी नई नवेली बदन हो गई.' बेटी को भी समझ में ना आए कि ऐसा कैसे हो रहा है। वो थोड़ी घबराती भी है, लेकिन अम्मा तो आत्मविश्वास की जीवित मूर्ति बनती जाती है। और उसके बाद जो होता है वो तो सबके लिए अकल्पनीय है। अम्मा अपनी बेटी के साथ पाकिस्तान जाती है। बाजाप्ता पासपोर्ट वीसा के साथ। बेटे, बहू–पोतों की सहमति है लेकिन उनको मालूम नहीं कि अम्मा के मंसूबे क्या

हैं। पाकिस्तान जाने के बाद ये राज़ खुलता है अम्मा यानी चंद्रप्रभा देवी का अतीत तो ये रहा है कि वो कभी चंदा हुआ करती थी और अनवर नाम के एक मुस्लिम शख्स के साथ अविभाजित भारत में उसकी शादी हुई थी। अम्मा यानी चंदा का जन्म पाकिस्तान में एक हिंदू परिवार में हुआ था लेकिन भारत–विभाजन के बाद मचे हफड़ धफड़ में कई अन्य हिंदू औरतों के साथ वो भी सरहद के इस पार चली आई। यानी हिंदुस्तान में. और हिंदुस्तान आकर यही चंदा चंद्रप्रभा देवी नाम से नई और दूसरी जिंदगी शुरू करती है। पर क्यों गई थी अम्मा, ऊर्फ चंद्रप्रभा देवी उर्फ चंदा इस उम्र में पाकिस्तान? धीरे–धीरे ये रहस्य खुलता है कि वो अपने पहले पति की खोज में वहां गई थी. और वहीं मरने भी, और खास तरीके से मरने, पाकिस्तान जाकर और वहाँ सुरक्षाकर्मियों द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद वो अपनी बेटी और पुलिस वाले से कहती है कि उसे पीछे से दौड़ते हुए आएं और जोर से धक्का दें. क्यों? इसलिए कि वो धक्का खाकर पीठ के बल गिरने का अभ्यास करना चाहती है और आखिर में जब वो गोली खाकर मरती है तो मुंह के बल नहीं बल्कि पीठ के बल ही गिरती है।

गीतांजलि श्री 'रेत समाधि' के बारे में कहती है–''हर साधारण औरत में छिपी एक असाधारण स्त्री की महागाथा है। रेत–समाधि... और है एक अमर प्रेम प्रसंग व रोजी जैसा अविस्मरणीय चरित्र।''1 उपन्यास की कहानी में अस्सी वर्ष की बुढ़िया जो अपने पति के गुजरने के बाद जीवन से निराश होकर खटिया पकड़ ली थी चलती–फिरती मौत बनकर जिंदगी गुजार रही थी। परिवार जिद करता अम्मा को नई जिंदगी देने का लेकिन अम्मा ने परिवार से पीठ कर ली थी। जैसे–''नहीं, मैं नहीं उठूँगी। गठरी लिहाफ़ में ढुकी बुदबुदा देती। नहीं अब तो मैं नहीं उठूँगी।"2 अम्मा के इस वाक्य से परिवार घबरा जाता और अम्मा को उठने की जिद करने लगता। बच्चे डर जाते उनको लगता पापा गए और उनको अम्मा को भी साथ लेके गए। बच्चे अम्मा से बहुत प्रेम करते जैसे सभी की साँसें अम्मा में चलती थी और जैसे अम्मा के जीने का मकसद पापा थे। पापा गए और अम्मा ने जैसे जीना छोड़ दिया।

उपन्यास की कथा तीन खंडों में विभाजित है। गीतांजलि श्री ने उपन्यास के प्रारंभ में ही उपन्यास का सार कहा है। जैसे की उपन्यास का अन्त अम्मा की मौत से होता है तो यह बात लेखिका ने शुरू में की है। जैसे–''कहानी का अंग ये बना कि गोली आई थी पर तब तक माँ मनमाफिक गिरने को माहिर हो चुकी थी। गोली आई और छेद करती निकल गयी। कोई भी दूसरा मिट्टी में मुँह साने लोट जाता पर माँ पोछे को उछली ज्यों कलाबाजी लगाती, आसमान ऊपर लिए और फतेह के अन्दाज में धरती पर लेट गयी, शान से, आन से, मानों आरामदेह बिझीने पर। मौत को अन्त मानने वालों ने इसे अन्त जाना पर जो जानते थे कि अन्त–वंत नहीं है ये. एक और सरहद लाँघ गयो है वो।''3

कथा की मुख्य पात्र दो औरतें और उसके साथ रोजी, नजीर भाई, अली अनवर, रजा मास्टर केके बड़े–बड़े की बीबी, बड़े के दो बेटे इन मुख्य पात्रों को छोड़कर बहुत सारे छोटे मोटे पात्र उपन्यास की कथा में शामिल होते हैं मनुष्य पात्र ही नहीं लेखिका ने निर्जीव वस्तुओं को भी पात्र के रूप में दर्शाया है जैसे, दिवार, कमरा, घर की किस्म–किस्म की बनी कलाकारी, रेगिस्तान, इन सबके साथ पशु–पक्षियों को भी लेखिका ने अपने उपन्यास में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। जैसे कि कहा गया है कि उपन्यास के तीन खंड हैं तो पहले खंड में एक आदमी की मौत दिखाई दी है वो वही इंसान है जो इस माँ के पति थे और पिता इसी बेटी को ऐसा लगता है कि मरने के बाद भी पालक–चालक वही व्यक्ति थे जिसकी मौत की बात पर माँ हर सूरत में मर गयी थी लेकिन बच्चों ने जिद पकड़ ली माँ को परिवार में वापिस लाने की। लेकिन माँ परिवार की हर कोशिश बेमतलब कर देती है। लेखिका लिखती हैं–''क्या माँ ने सोचा होगा कि उसे जिलाने की बच्चों की कोशिश उसे दीवार में घुसा रही है? क्या ऐसा था? कमरे की तरफ पदचाप आती और वो पीठ कर लेती, दीवार में सटने लगती। मरती जाती. आँख नाक बंद, कान ठप्प, मुँह सिला मन सुन्न, अरमान नदारद, पखेरू उड़ उड़ा।''4 अतः माँ ने पूरी तरह से ठान लिया था कि वो जीवित नहीं रहेगी। माँ के हर जवाब पर परिवार वाले डर जाते थे उनको लगता माँ सच में मर रही है। लेखिका ने काव्यात्मक संवादों का भी प्रयोग किया है। जब माँ का दिलपसंद पोता. सिद्धार्थ जो आज के जमाने का नया नाम शसिडश जो माँ उसकी तरफ पूरी तरह से पीठ नहीं कर सकती थी। अपनी दादी को उठाने आता है तो काव्यात्मक पद्धति से अपनी बात रखता है।

उपन्यास की मुख्य भूमिका निभाने वाली पात्र बेटी जो अपनी जिंदगी स्वयं के मुताबिक स्वतंत्र्य रूप से अपने विचार रखती है और उसको परिवार में सिर्फ माँ का सहारा है। उपन्यास में उसके फटेहाल जिंदगी के बारे में लेखिका लिखती हैं–''जैसे बहन बेचारी डॉटना फटकारना दुराना सब जरूरी था उसे वापस राह पर लाने को। पर थी वो बेचारी कितनी बेवकूफ लड़की, नाज़ों से पली. लाड़ली लल्ली की जिंद। अपने ही नुकसान के प्रति नादान। अनजान और फायदा उठानेवाले, भुलताव में डालनेवाले नालायक जन, जिन्हें वो प्रेमीगण समझती। रह जाती बार–बार अकेली। उसके ऊंचे घराने, अफसर भाई बाप को पटा नहीं पाए तो बोरिया बिस्तर लेकर चल दिए। अकेली. गरीब, बेचारी उसे छोड़कर कहीं टिककर नौकरी भी नहीं मिली। आज यहाँ लिख दिया, कल वहाँ बोल आयी। सेक्रेटेरिएट लाइब्रेरी में कुछ खरीद उसकी किसी के पल्ले न पड़ने वाली इक्का दुक्का किताबों की, भाई ने करा दी। बाकी, हारी मारी फिर रही है, कपड़े लत्ते भी गंवारों जमादारिनों से, कभी खुरदुरा, जैसे टाट का कुरता, अब फटा तब फटा पजामा, कभी राजस्थान, गुजरात के गाँव से पच्चीस तीस रूपल्ले में मिले बकवास घाघरे।

शक्ल सूरत से उसकी मुफलिसी टपके और देखकर परिवार के आँसू।''5 बहन नये जमाने परिवार मूल्यों से विमुक्त खुली आत्मा थीं।

कथा तब मनोरंजक बनती है जब मूर्च्छित साया बनकर घूमने वाली अस्सी वर्ष की औरत नहीं उठूँगी, नहीं उठूँगी, बोलकर एकदम तितली जैसी उड़ जाती है और नये रूप में परिवार में शामिल हो जाती है। लेखिका कहती हैं, जो कभी नहीं उठूँगी ये जिद पकड़ने वाली माँ नहीं बोलते–बोलते नये रूप में उभर आती है। जैसे–''नहीं नहीं मैं नहीं उठूँगी। अब तो में नहीं उठूँगी। अब्ब तो मैं नइ उठूँगी अब्ब तो में नई उठूँगी। अब मैं नयी उठूँगी। अब तो मैं नयी ही उठूँगी।''6 नहीं से नइ और नई से नयी यह सफर माँ का बहुत ही रोमांचित है और सही में वह नये रूप में ही सामने आती है जैसे सोलह बरस की लड़की हो। दूसरे अध्याय श्धूपश में पीठ हो चुकी स्त्री के अरमानों के फिर से खिल उठने की कथा है। जीने का स्वतंत्र अंदाज है जिसे लिए बेटी संयुक्त परिवार से अलग हो गयी थी। उसी अंदाज में माँ ऐसे ढलती है और खिल उठती है कि बेटी को खुद के गृहस्थ होने का एहसास होने लगता है और यहाँ पर ही माँ और रोजी बुआ के बीच के सुंदर प्रेम को देखने और उसे महसूस करने का मौका भी मिलता है। किसी तृतीय पंथी और एक स्त्री के प्रेम का खुबसूरत सा रिश्ता इस उपन्यास में देखने को मिलता है। इस प्रेम में इतनी उन्मुक्तता है कि रोजी बुआ रजा टेलर मास्टर हो जाए, तो भी उपन्यास की कथा में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती।

बेटी के घर में आने के बाद बेटी अम्मा बन जाती है और माँ बेटी। टूटी फूटी बेचारी माँ को बेटी ने माँ बनकर सोचा और माँ के माथे पर हाथ फेरा माँ ने बेटी के घर आकर नहीं बोला कि नहीं मैं तो नहीं उठूँगीश बोली हो और अकेली ही उठती बैठती एक नये अंदाज में एक नये जीवन में ढलती हुई और माँ के जीवन को और तरोताजा बनाया माँ की सखी जो उसके सुख–दुःख की साथिन थी। रोजी जो घरवाल उसे रोजीबुआ नाम से पुकारते थे। जैसे रोजी के बिना माँ का पत्ता भी नहीं हिलता था जैसे रोजी के बिना माँ का अस्तित्व ही न था। बेटी के घर में आने के बाद माँ ऐसी आजाद जिंदगी व्यतीत करती है जो कभी उसने जी ही नहीं हो। हर एक अधूरे एहसास को भी जीती है जो उसकी जिंदगी में छूट गये हैं। लेखिका माँ के इस व्यवहार का चित्रण करते हुए लिखती हैं–''अपने बदन की कहते हुए माँ ऐसी जैसी कोई नयी नयी बच्ची से रहा न जाए कि सुनो, गुड न्यूज मेरा पीरियड शुरू हो गया, आज स्कूल नहीं जाऊँगी, डिस्पिरिन लूँगी और हॉट वाटर बॉटल और धूप में पड़ी रहूँगी। या चुपके से दिखाती है, देखो यहाँ बाल उगने लगे। तब मजा न ले पाई तो इसलिए अब? और माँ के इस व्यवहार इस बचपने में उनका साथ देती थी रोजीबुआ।''7 बेटी जो जीवन अपनी मर्जी से जीती थी, और अम्मा दूसरों की मज़ी करते करते अचानक चिड़िया बन जाती है और अपनी जिंदगी अपने तरिके से जीती है। माँ का तितली जैसे उड़ना फूलों की तरह खिलना पंछियों की तरह चहकना ये सब देखकर माँ बनी हुई बेटी अपना प्रेम भी केके अपनी जिंदगी अलग करती है क्योंकि वो अब माँ बन चुकी है अपनी माँ की माँ। बेटी के बारे में लेखिका एक जगह पर कहती हैं–''बेटी ने जाना, पर शायद अवचेतन में, कि माँ और प्रेमिका एक खाल में नहीं रहते। आपकी खाल में माँ उग आये तो बड़ी आसानी से प्रेमिका की केंचुली उतर जाती है।"8 इस प्रकार से आजाद खयाल रखनेवाली बेटी अपनी नीजी जिंदगी को भी माँ के लिए किनारे पर रखती है।

माँ की तरह ही अपने हिसाब से जिंदगी जीनेवाली रोजी इस दुनिया से चली जाती है और माँ की जिंदगी फिर से अंधकारमय हो जाती है। रोजी मर गयी अपनी तरीके से जीवन व्यतीत करते–करते दूसरों के तरीके से मर गयी रोजी की हत्या हो जाती है। रोजी बुआ के निर्मम अंत के बाद शुरू होता है उपन्यास का तीसरा और महत्वपूर्ण हिस्सा 'हद–सरहद' जब माँ रोजी बुआ की आखिरी ख्वाहिश पूरी करने के लिए पाकिस्तान जाने का निश्चय करती है, क्योंकि रोजी को उनके किसी रिश्तेदार को चिरोंजी पहुँचानी थी जो वे नहीं पहुँचा सकी। चिरोंजी की वही पोटली और एक पुरानी खंडित मूर्ति लिए छोटी हो रही स्त्री, सरहद पार पहुँच जाती है। वही जिसकी गलियों, चौक, चौराहे, बाजार, खंडहर और पेड़–पौधे गली नालियों तक उसकी खास दोस्त रोजी ने उसे दिखाए हैं जिन रास्तों पर आँखे बंद किए वे आगे बढ़ती है। यह उपन्यास का तीसरा हिस्सा इसलिए महत्वपूर्ण है कि इस हिस्से में अम्मा के जीवन का रहस्य छुपा है और इस अध्याय को पढ़ने के बाद इस उपन्यास का शीर्षक 'रेत समाधि' सार्थक लगता है। जैसे रेत में समाधिस्त होती है और हलके से हवा के झोंके से भी रेत ढह जाती है और वह रहस्य कहानी बनकर सामने आता है।

कभी यह उपन्यास पढ़ते–पढ़ते विश्वसनीय नहीं लगता जैसे माँ का फिर से जाना. फिर उठना तो पाठकों के समझने के विपरीत किसी और ही धुन में उठना। कभी पति के न रहने से जिंदगी अंधकार मय हो जाना। तो कभी रोजी के मरने के बाद जिंदगी में फिर से निराश होना और अस्सी वर्ष की बीमार उम्र में बॉर्डर पार हो जाना। इन सब अविश्वसनीय बातों के बावजूद भी यह कृति सरलता से आते–आते रहस्यमय बन गयी है। यहाँ पर लगता है कि अस्सी साल की उम्र में माँ स्वार्थी हो गयी थी। लेकिन लखिका ने स्वयं ही उपन्यास के पृष्ठ पर ही लिखा है कि 'हर साधारण औरत में छिपी एक असाधारण स्त्री की महागाथा है रेत समाधि' और लेखिका की यह बात तब सिद्ध होती है जब एक अस्सी वर्ष की बूढ़ी महिला हर सरहद पार करती है और पाकिस्तान जा पहुँचती है। सीमापार करने से जो बाधाएँ आती हैं और वो निरंतर बनी रहती हैं रोजी के

मरने के बाद भी माँ के मन में रोजी हमेशा के लिए जीवित थी। उनकी दोस्ती मरने के बाद भी कम नहीं हुई। इनके रिश्ते पर लेखिका एक जगह पर लिखती हैं–"बुढ़ापे की दोस्ती की ये ही कैफियत होगी। जिससे भी हो जाए. आदमी या जिन्न से या जानवर से, फिर उसका साथ ही जाता है और जब नहीं रहता तो भी निभाता है।"9 माँ अपना वर्तमान छोड़कर भूतकाल को खोजती हुई सरहद पार करती है। बहुत सारे संकटों का सामना उन्हें करना पड़ता है और इसी बीच माँ के जीवन के अनकहे पहलू सामने आते हैं जो सरहद बनने के पहले के थे लेखिका कहीं भी नाटकीय नहीं होती है यहाँ कोई मेलोड्रामा नहीं है, बस सीधी सी बात है कि यह सरहद कितनी बुरी है, जो दो प्रेमियों को एक–दूसरे से दूर होना पड़ा कि सरहदों के बँटवारे के कारण उन्हें अपना अलग–अलग परिवार बसाना पड़ा और वो खुद अम्मा थी जो सरहद के कारण अपना प्यार छोड़ने पर मजबूर हुई थी अपने तरिके से जिंदगी व्यतीत करनेवाली बेटी गैर मुल्क में चुन्नी से सिर ढंके रहती है कि शायद वह उनकी परंपराओं का सम्मान करे, तो वह भी उनका यानी कैदियों का सम्मान करें, जबकि सरहदों को ठुकरा देनेवाली माँ न सिर ढँकती है न बड़े अफसर से बात करते हुए लिहाज करती है। जैसे सीधे बात करती है उन पर एक ही धुन सवार है अपने पति अनवर से मिलने की । ऐसा लगता है अम्मा बस उन्हीं के लिए जीवित थी। जो सारे संकटों का सामना करते हुए सरहद, के पार आ चुकी है अपने प्यार कि खोज में अंत में अम्मा को अपना प्यार मिल भी जाता है लेकिन उसको मोत भी मिलती है। शायद यह सरहद पार करने की या अपने जिद पर अपने प्यार को पा लेने की सजा थी।

'रेत समाधि' उपन्यास पर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित की गई राजकमल प्रकाशन द्वारा परिचर्चा में अपना मत व्यक्त करते हुए मृणाल पाण्डे जी कहती है कि, ''यह उपन्यास सारी सरहदों को निरर्थक बना देने वाला और निरर्थक चीजों को एक–साथ जोड़कर सार्थक बना देनेवाला है। उन्होंने कहा कि इस उपन्यास में माँ की उपस्थिति काफी मार्मिक है। माँ का जाना एक तरह से मुक्तिदायक भी होता है और दर्ददायक भी।" यह सच भी है कि माँ का प्यार कोई भी सरहद बाँट नहीं सका। उम्र के आखिरी पड़ाव में भी अपने प्रेमी की तलाश करती हुई अम्मा अपने जीवन की सरहद को पार करती है। बँटवारे में अपना घर–बार ही नहीं अपना दिल और अहसास भी पीछे छोड़ आये प्रेमियों की कथा को जानने के लिए यह कृति अत्यंत हि उपयुक्त सिद्ध होती है। कथा के संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कथा के केंद्र में दो औरतें हैं एक बड़ी हो रही हैं और दूसरी छोटी। दोनों रिश्ते में माँ बेटी हैं बड़ी हो रही स्त्री यानी बेटी हर सीमा को लाँघ जाना चाहती है पर हर सरहद से डरती है और छोटी हो रही स्त्री यानी माँ उम्र भर सीमाओं में बंधी रहती है पर अंत में कोई सरहद उसे रोक नहीं पाता यह छोटी सी कथा अपना इतना विशाल रूप धारण करते हुए कई परतों को पाठकों के सामने खोलती है और पाठक उसमें बिना दिशा भान के बहता चलता है कि जैसे रेत का कोई समुद्र हो जो कहाँ बहकर जाना है या कहाँ पर किनारा है पता नहीं चलता। पाठक बहते–बहते अपने आप किनारे पर जा पहुँचता है। बहुत सारा कटू अनुभव पाठक के सम्मुख खड़ा हो जाता है। छोटी हो रही स्त्री जब देह, मन वर्जनाओं की सब सीमाएँ लाँघ रही होती है। वहाँ और एक तीसरा पात्र भी है, रोजी बुआ का बिना किसी लेन–देन या स्वार्थ को केवल स्नेह की डोर से बंधी यह बेहद खूबसूरत प्रेम कथा भी है। इसी कथा की डोर के आगे तय होता है। सरहदें पार करने का विराट प्रयास। लेखिका ने इस उपन्यास लेखन के अनुभवों को एक परिचर्चा में बताते हुए कहा है–'कि मैंने बहुत लम्बे अरसे को इस कृति के साथ जीया है। कभी–कभी मुझे लगा कि इस उपन्यास को लिखते–लिखते में भी रेगिस्तान में रेत की समाधि बन गयी हूँ। कितने किरदार, कहानियाँ और हवाएँ चली आईं और यह उपन्यास बन पड़ा। उन्होंने कहा कि मेरी परम्परा, समाज मेरे पूर्व लेखकों और मेरे समकालीन लखकों से हौसला मिला और यह कृति बनती गयी।' इस तरह से 'रेत–समाधि' एक विलक्षण कृति बन गई है।

संदर्भ–

गीतांजलि श्री, रेत–समाधि, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि., नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ कवर

वही, पृ. 12

वही, पृ. 10

वही, पृ. 13

वही, पृ. 33

वही, पृ. 13

वही, पृ. 133

वही, पृ. 138

वही, पृ. 284